दैनिक भास्कर

जींद भास्कर 07-05-2026

कार्यक्रम • चौधरी रणबीर सिंह यूनिवर्सिटी में ज्ञान से संपदा विषय पर राष्ट्रीय कार्यशाला

शोध व नवाचार राष्ट्र की प्रगति के आधार: वीसी

भास्कर न्यूज | जींद

सीआरएसयू में बुधवार को ज्ञान से संपदा विषय पर राष्ट्रीय कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यशाला का आयोजन डॉ. भीमराव आम्बेडकर पुस्तकालय एवं आईपीआर सेल के संयुक्त तत्वावधान में किया गया। कार्यक्रम में कुलगुरु प्रो. रामपाल सैनी बतौर मुख्य अतिथि शामिल हुए।

उन्होंने कहा कि वर्तमान युग ज्ञान आधारित अर्थव्यवस्था का है, जहां शोध और नवाचार से ही राष्ट्र की प्रगति के आधार बनते हैं। विद्यार्थी अपने अनुसंधान को केवल अकादमिक सीमाओं तक ना रखें, बल्कि उसे समाज और उद्योग से जोड़ते हुए व्यावहारिक रूप में परिवर्तित करें।

जींद. राष्ट्रीय कार्यशाला का उद्घाटन करते वीसी प्रो. रामपाल सैनी।

मुख्य वक्ता इंस्टीट्यूट ऑफ ट्रेड, कोलकाता के निदेशक डॉ. धनपत राम अग्रवाल ने कहा कि आईपीआर आज के समय में आर्थिक सशक्तीकरण का एक महत्वपूर्ण साधन है। पेटेंट, कॉपीराइट एवं ट्रेडमार्क के माध्यम से नवाचार को व्यावसायिक रूप पर जोर दिया जाना चाहिए। प्रतिभागियों को अपने शोध भी पेटेंट करवाने चाहिए। इनोवेशन तभी सार्थक है, जब उसे समाज व उद्योग के उपयोग में लाया जाए। महर्षि दयानंद यूनिवर्सिटी से कुलगुरु प्रो. राजबीर सिंह ने कहा कि यूनिवर्सिटी में शोध आधारित नवाचार केंद्र बनना चाहिए। गुणवत्तापूर्ण अनुसंधान ही देश को आत्मनिर्भर बनाने में सहायक सिद्ध होगा। इस अवसर पर कुल सचिव प्रो. सीमा गुप्ता, लाइब्रेरी इंचार्ज प्रो. विशाल वर्मा, डिप्टी लाइब्रेरियन डॉ. अनिल कुमार आदि उपस्थित रहे।

पंजाब केसरी
THU,07 MAY 2026
EDITION: JIND KESARI, PAGE NO. 4

ज्ञान से सम्पदा विषय पर राष्ट्रीय कार्यशाला का आयोजन

जींद, 6 मई (ललित) : चौधरी रणबीर सिंह विश्वविद्यालय के डॉ. भीमराव आम्बेडकर पुस्तकालय एवं आई.पी.आर. सैल द्वारा संयुक्त रूप से ज्ञान से सम्पदा विकास में अनुसंधान एवं बौद्धिक सम्पदा अधिकार की भूमिका विषय पर एक दिवसीय राष्ट्रीय कार्यशाला का सफल आयोजन किया गया। इस कार्यशाला का उद्देश्य शोध, नवाचार एवं बौद्धिक सम्पदा अधिकार के माध्यम से आर्थिक एवं सामाजिक विकास की संभावनाओं को प्रोत्साहित करना रहा।

कार्यक्रम का शुभारम्भ करते वी.सी. ।

कार्यक्रम के मुख्यातिथि एवं विश्वविद्यालय के कुलगुरु प्रो. राम पाल सैनी ने कहा कि वर्तमान युग ज्ञान आधारित अर्थव्यवस्था का है, जहां शोध और नवाचार ही राष्ट्र की प्रगति का आधार बनते हैं। उन्होंने विद्यार्थियों एवं शोधार्थियों को प्रेरित करते हुए कहा कि वे अपने अनुसंधान को केवल अकादमिक सीमाओं तक न रखें, बल्कि उसे समाज और उद्योग से जोड़ते हुए व्यवहारिक रूप में परिवर्तित करें। शैक्षणिक अधिष्ठाता और लाइब्रेरी इंचार्ज प्रो. विशाल वर्मा ने इस वर्कशॉप में पहुंचने पर सभी का फॉर्मल वैलकम किया और वर्कशॉप के मुख्य उद्देश्य से अवगत करवाया।

कार्यक्रम के मुख्य वक्ता डॉ. धनपत राम अग्रवाल, निदेशक, इंस्टीच्यूट ऑफ ट्रेड, कोलकाता ने कहा कि आई.पी.आर. आज के समय में आर्थिक सशक्तिकरण का एक महत्वपूर्ण साधन है। उन्होंने पेटैंट, कॉपीराइट एवं ट्रेडमार्क के माध्यम से नवाचार को व्यावसायिक रूप देने पर जोर दिया और प्रतिभागियों को अपने शोध को पेटैंट कराने के लिए प्रेरित किया। उन्होंने यह भी कहा कि इनोवेशन तभी सार्थक है जब उसे समाज और उद्योग के उपयोग में लाया जाए तथा युवाओं को स्टार्टअप एवं उद्यमिता की दिशा में आगे बढ़ने का आह्वान किया।

कार्यक्रम के विशिष्ट अतिथि प्रो. राजबीर सिंह, कुलगुरु, महर्षि दयानंद विश्वविद्यालय, रोहतक ने अपने वक्तव्य में कहा कि विश्वविद्यालयों को शोध आधारित नवाचार का केंद्र बनना चाहिए। उन्होंने कहा कि गुणवत्तापूर्ण अनुसंधान ही देश को आत्मनिर्भर बनाने में सहायक सिद्ध होगा और आई.पी.आर. के प्रति जागरूकता बढ़ाना समय की आवश्यकता है।

उन्होंने यह भी सुझाव दिया कि शैक्षणिक संस्थानों को उद्योगों के साथ सहयोग बढ़ाना चाहिए ताकि शोध का व्यवहारिक लाभ समाज तक पहुंच सके। आज के ज्ञान-आधारित युग में स्टूडैंट्स की भूमिका केवल पढ़ाई तक सीमित नहीं है।

दैनिक जागरण

Date-07.05.2026

संक्षिप्त समाचार

शोध और नवाचार ही राष्ट्र की प्रगति का आधार : प्रो. रामपाल

चौधरी रणबीर सिंह विश्वविद्यालय में आयोजित कार्यशाला में विद्यार्थियों को जानकारी देते हुए कुलगुरु प्रो. रामपाल सैनी। ● सौजन्य सीआरएसयू

जासं ● जींद : चौधरी रणबीर सिंह विश्वविद्यालय में राष्ट्रीय कार्यशाला का आयोजन कुलगुरु प्रो. रामपाल सैनी की अध्यक्षता में हुआ। उन्होंने कहा कि वर्तमान युग ज्ञान आधारित अर्थव्यवस्था का है, जहां शोध और नवाचार राष्ट्र की प्रगति का आधार हैं। विद्यार्थियों और शोधार्थियों को प्रेरित करते हुए उन्होंने कहा कि अनुसंधान को केवल अकादमिक सीमाओं में न रखें, बल्कि इसे समाज और उद्योग से जोड़कर व्यावहारिक रूप में परिवर्तित करें। मुख्य वक्ता इंस्टीट्यूट आफ ट्रेड कोलकाता के निदेशक डा. धनपत राम अग्रवाल ने कहा कि आइपीआर आज आर्थिक सशक्तिकरण का महत्वपूर्ण साधन है। उन्होंने पेटेंट, कापीराइट और ट्रेडमार्क के माध्यम से नवाचार को व्यावसायिक रूप देने पर जोर दिया।

Date-07.05.2026

National Workshop on "Wealth from Knowledge" organised at Chaudhary Ranbir Singh University, Jind

SHIV KUMAR SHARMA
JIND, MAY 6

The Dr. Bhimrao Ambedkar Library and the IPR Cell at Chaudhary Ranbir Singh University, Jind, jointly organised a successful one-day national workshop on the theme "Wealth from Knowledge: The Role of Research and Intellectual Property Rights (IPR) in Development." The objective of this workshop was to foster the potential for economic and social development through research, innovation, and Intellectual Property Rights (IPR).The Chief Guest of the programme and the University's Vice-Chancellor, Prof. Ram Pal Saini, stated in his address that the current era is characterised by a knowledge-based economy, wherein research and innovation serve as the very foundation of national progress. Inspiring the students and researchers, he urged them not to confine their research solely within academic boundaries, but rather to transform it into practical applications by forging connections with society and industry. Prof. Vishal Verma, Dean of Academics and Library In-charge, extended a formal welcome to all attendees at the workshop and outlined the primary objectives of the event.

The keynote speaker of the programme, Dr. Dhanpat Ram Agarwal—Director of the Institute of Trade, Kolkata—asserted that IPR serves as a crucial instrument for economic empowerment in the contemporary world. He emphasised the importance of commercializing innovation through patents, copyrights, and trademarks, and encouraged the participants to patent their research findings. He further remarked that "innovation is truly meaningful only when it is utilized by society and industry," and called upon the youth to venture into the realms of startups and entrepreneurship.The present era is an age of knowledge, science, technology, research, and innovation—elements that constitute the bedrock of human development and prosperity. To transform India into a developed nation, it is imperative that we objectively assess our current standing and address our shortcomings. Research must not remain confined solely within the precincts of universities; rather, it must extend its reach to industries and entrepreneurs. Historically, human life was predicated upon natural resources; today, however, human resources have emerged as the most critical asset.

India possesses approximately 18 per cent of the world's population—its greatest strength—yet we are unable to fully leverage this potential, and the "brain drain" remains a significant challenge. Economically, India currently lags behind the United States and China, primarily due to insufficient investment in research and innovation. Therefore, while promoting our inventions, we must simultaneously safeguard them through Intellectual Property Rights (patents, copyrights, trademarks, etc.). If India effectively utilizes its human resources, fosters research and innovation, and prioritizes intellectual property, the dream of a "Developed India" can be realized in the years to come.